कृषि नवाचार
हिन्दी पत्रिका
ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 01 भाग 08 नवम्बर, 2024

जलवायु परिवर्तन का पर्यावरण पर दिन प्रतिदिन प्रभाव

प्रेरणा अवस्थी [1], शाम्भवी अवस्थी [2] और विनीता बिष्ट [3]
[1]एम.ए. स्कॉलर, इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी न्यू दिल्ली
[2]एम.एस.सी. स्कॉलर, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय बांदा, उत्तर प्रदेश- 210001
[3]सहायक प्रोफेसर, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय बांदा, उत्तर प्रदेश- 210001
E-mail: jyotivinita89@gmail.com

जलवायु परिवर्तन

पर्यावरण पृथ्वी पर विद्यमान एक ऐसा आवरण है जिस पर मानव जगत तथा अन्य प्राणियों एवं जीव जंतुओं का जीवन संभव हो पाता है यह हमारे स्वरूप रूप जीवन और जीविता को तय करता है पर्यावरण परि आवरण परि जो हमारे चारों ओर है एवं आवरण = जो हमें चारों ओर से घेरे हुए हैं, अर्थात चारों ओर से घेरे हुए आवरण को पर्यावरण कहते हैं। पर्यावरण के बिना जीवन संभव नहीं है, मानव होने के नाते हमारा कर्तव्य है कि हम इसका संरक्षण करें, परंतु वर्तमान में मानव जाति की बदलती महत्वाकांक्षाओं, बढ़ती जनसंख्या, विकास एवं शक्तिशाली बनने की दिशा में निरंतर वृद्धि पर्यावरण को बहुत हानि पहुंचाई है जिसके कारण पर्यावरण के चार महत्वपूर्ण तत्व जलवायु, हवा, एवं जीव सभी पर इसका प्रभाव दिखाई दे रहा है तथा जलवायु हवा सभी प्रदूषित हो रहे हैं वायुमंडल में उपस्थित ग्रीन हाउस गैसें मिथेन, कार्बन डाइऑक्साइड आदि जो सूर्य के प्रकाश को परावर्तित होने से रोकती हैं तथा जिनके कारण स्थल पर पेड़ एवं पौधे विकसित हो पाते हैं वही ग्रीनहाउस गैस अब पर्यावरण को जलवायु परिवर्तन यानी क्लाइमेट चेंज के रूप मेज प्रभावित कर रही है।

फोटो साभारः सीएसई

जलवायु परिवर्तन का प्रभाव

जलवायु परिवर्तन के कारण पर्यावरण में अनेकों परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं जैसे तापमान में अत्यधिक वृद्धि, बिना मौसम बरसात, पहाड़ों पर बर्फ का पिघलना, समुद्र का जलस्तर बढ़ना, कहीं बाढ़ जैसी स्थिति तो कहीं पर सूखा आदि की समस्या समस्याएं जलवायु परिवर्तन के कारण ही है। विश्व मौसम विज्ञान संगठन का कहना है की व्यापक औद्योगिकीकरण के कारण पृथ्वी पर तापमान में 1.5 डिग्री सेल्सियस तक की वृद्धि हुई है। 2005 से 2015 तक के बीच तापमान में 3.6 मिलीमीटर की वृद्धि दर्ज की गई है, जीवाश्म ईंधन का लगातार अत्यधिक दोहन तथा तेल का उत्पादन जिस तेजी से पृथ्वी से किया जा रहा है यह भी हमारे पर्यावरण को नुकसान पहुंचा रहा है। नेशनल ओसियानिक एंड एटमॉस्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन के मुताबिक समुद्र का स्तर बीसवीं सदी की तुलना में अब दुगनी रफ़्तार से बढ़ रहा है, 2016 से 2015 के बीच दशमलव 0.14 इंच प्रतिवर्ष वृद्धि दर्ज की गई है इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि अगर यह वृद्धि यूं ही लगातार बढ़ती रही तो 2050 तक दुनिया के प्रमुख तटीय शहर जलमग्न हो जाएंगे, जिसमें मुंबई कोलकाता और चेन्नई जैसे भारत के प्रमुख महानगर

फोटो साभारः सीएसई

ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 01 भाग 08 नवम्बर, 2024

भी शामिल है और अगर यह जलस्तर न्यूनतम 1 फुट भी बड़ा तो दुनिया भर के 25 करोड़ से ज्यादा लोग बेघर हो जाएंगे। यह एक वैश्विक तापमान में लगातार वृद्धि का ही परिणाम है। भारत के सरकारी आंकड़े के अनुसार 1950 के दशक से अभी वर्तमान तक एक लाख 64 हजार हेक्टेयर जंगल केवल और केवल माइनिंग की वजह से तबाह हो चुके हैं जिसके परिणाम स्वरूप हजारों जीवजंतुओ का आशियान नष्ट हो गया तथा आदिवासी जनजातियां जो जंगल में निवास करती हैं जिनका जीवन जंगलों पर निर्भर है वह सब बुरी तरह से प्रभावित है।

हीटवेव एक चुनौती

आईएमडी द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार देश के 714 में से करीब 61 फ़ीसदी जिलों में ज्यादा बारिश दर्ज की गई है "हाउ इज इंडिया एडाप्टिंग टू हीटवेव" रिपोर्ट फॉर सेंटर ऑफ पॉलिसी रिसर्च से से यह पता चला कि भारत अभी हीटवेव का सामना करने के लिए पूर्णता तैयार नहीं है अत्यधिक गर्मी स्वास्थ्य एवं उत्पादकता दोनों के लिए ही भारी चुनौती है जो कि जलवायु परिवर्तन के कारण ही हाल में हमें देखने को मिल रही है और जलवायु परिवर्तन के कारण ही दशकों से हो रहे परिवर्तन ही लु या हीटवेव की आवृत्ति में बढ़ोतरी के लिए जिम्मेदार है हालांकि लू या हीटवेव के प्रभाव को कम करने के लिए भारत में "हीट टेक्शन प्लान" जो कि हीटवेव के कारण होने वाले अत्यधिक नुकसान से निपटने की प्रारंभिक प्रक्रिया है शुरू हो गई है। यह रिपोर्ट से यह पता चलता है कि लगभग सभी एक्शन प्लान सबसे अधिक प्रभावी होने वाले लोगों की पहचान एवं शहरों की पहचान करने में विफल है गर्मी के तनाव के कारण 2030 तक काम के घंटे में 508: का नुकसान देखने को मिल सकता है जो कि अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन का अनुमान है। आदित्य पिल्लई जोकि सेंटर ऑफ पॉलिसी रिसर्च में कार्यरत हैं उनके अनुसार भारत ने पिछले एक दशक में कई दर्ज हीट टेक्शन प्लान बनाए गए हैं एवं इसमें प्रगति आकलन के अनुसार यह पता चलता है कि भविष्य में योजनाओं पर हमें और अधिक एवं समर्पण रूप से काम करना होगा।

कृषि पर प्रभाव

हाल में ही डाउन टू दी अर्थ रिपोर्ट के अनुसार इस वर्ष के शुरुआत में ही इस वर्ष मौसम की चरम घटनाओं के कारण 8 लोगों की मौत हुई एवं लगभग 39000 हेक्टेयर फसल नष्ट हो गई जिसमें सबसे ज्यादा हरियाणा में सबसे अधिक फसली नुकसान देखा गया एवं 3 मार्च 2023 को भारत के कई हिस्सों में बेमौसम बारिश और ओले गिरने के कारण अत्यधिक फसल बर्बाद हो गई जिससे फसलों को भारी नुकसान पहुंचा है। अत्यधिक जनसंख्या के कारण अधिक उत्पादन की आवश्यकता होती है जिससे किसानों के द्वारा कीटनाशकों तथा रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से अत्यधिक पैदावार के कारण भूमि की उर्वरक क्षमता नष्ट हो रही है जिस कारण वश भूमि का लगभग 40% हिस्सा कीटनाशकों की वजह से नष्ट हो रहा है। भूमि बंजर हो रही है, जिससे उस भूमि को छोड़कर अन्य स्थानों में कृषि कार्यों की वजह से वनों को काटा जा रहा है। बढ़ते शहरीकरण के कारण पेड़ पौधे और जंगल तबाह हो रहे हैं, पेड़ पौधे नष्ट होने से तापमान में वृद्धि के कारण ग्लोबल वॉर्मिंग बढ़ रही है। भारत में कृषि में अचानक और बार बार आने वाले बदलाव एवं स्थानीय रूप से गर्म शहरों के कारण अत्यधिक नुकसान झेलना पड़ता है। भारत में इसका सबसे अत्यधिक असर गरीबों पर रहेगा इससे उनके स्वास्थ्य एवं आए दोनों पर असर पड़ेगा।

भविष्य एवं हमारा कर्तव्य

इस प्रकार मनुष्य के द्वारा प्रकृति से की जा रही छेड़छाड़ जीवजंतुओं, पर्यावरण एवं मनुष्य को स्वयं बहुत अधिक प्रभावित कर रही है और अब जलवायु परिवर्तन वर्तमान एक बड़ी समस्या बन चुका है जो आज भले ही मनुष्य को इतना अधिक प्रभावित ना प्रतीत हो रहा हूं परंतु आगे आने वाले भविष्य की पीढ़ियों को यह निश्चित रूप से ही अधिक प्रभावित करेगा। इस कारण हमारा यह कर्तव्य है कि हम अपने पर्यावरण को सुरक्षित करें जिससे हम लोग और हमारी आने वाली पीढ़ियों को अधिक परेशानियों का सामना ना करना पड़े। जलवायु परिवर्तन से बचने के लिए बहुत अधिक नहीं बल्कि छोटे. छोटे प्रयासों की ओर व्यापक स्तर पर जागरूकता की आवश्यकता है, जिससे हम अपने पर्यावरण को और अधिक नुकसान से बचाते हुए इसका संरक्षण कर सकते क्योंकि पर्यावरण से ही मनुष्य का जीवन सम्भव है, वरना बिना पर्यावरण के एक दिन मनुष्य का अस्तित्व भी समाप्त हो जाएगा।

● ● ●